NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

छायावाद

B.H.D.E.-144

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

छायावाद

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	छायावाद : स्वरूप और विकास	1
2.	जयशंकर प्रसाद और उनकी कविता	20
3.	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और उनकी कविता	34
4.	सुमित्रानंदन पंत और उनकी कविता	46
5.	महादेवी वर्मा और उनकी कविता	60
6.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'चिंता' सर्ग (भाग-1) छंद 1 से 40	75
6a.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'चिंता' सर्ग (भाग-2) छंद 41 से 80	90
7.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'आंसू' का अंश	103
8.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'जुही की कली' और 'संध्या सुंदरी'	111
9.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'जागो फिर एक बार' और 'बांधो न नाव इस ठांव, बंधु'	121

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
10.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'मोह' और 'नौका विहार'	129
11.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'भारतमाता'	138
12.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' और 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ'	143
13.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : 'जाग तुझको दूर जाना' एवं 'विरह का जलजात जीवन'	151

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

छायावाद

B.H.D.E.-144

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं तीन की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) अंधकार में मलिन चित्ता की, धुंधली आभा
लीन हुई,
वरुण व्यस्थ थे, घनी कालिमा, स्तर-स्तर
जमती पीन हुई।
पंचभूत का भैरव मिश्रण, शंपाओं के शकल-निपात,
उल्का लेकर अमर शक्तियाँ, खोज रहीं ज्यों
खोया प्रात।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6*(a)*, पृष्ठ-92, व्याख्या-6

(ख) जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई,
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आयी।
मेरे क्रन्दन में बजती
क्या वीणा? जो सुनते हो,
धागों से इन आँसू के
निज करुणा-पर बुनते हो!

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-104, व्याख्या-2

(ग) बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु!
पूछेगा सारा गाँव बन्धु!
यह घाट वही जिस पर हँसकर,
वह कभी नहाती थी धँसकर,
आँखें रह जाती थीं फँसकर,
कँपते थे दोनों पाँव बन्धु!
वह हँसी बहुत कुछ कहती थी,
फिर भी अपने में रहती थी,
सबकी सुनती थी, सहती थी,
देती थी सबके दाँव, बन्धु!

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-124, व्याख्या-1

(घ) भारतमाता
ग्रामवासिनी!
खेतों में फैला है श्यामल
धूल भरा मैला-सा आँचल,
गंगा यमुना में आँसू जल,
मिट्टी की प्रतिमा/उदासिनी!

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-138, व्याख्या-1

(ङ) सीमा ही लघुता का बंधन,
है अनादि तू मत घड़ियाँ गिन,
मैं दृग के अक्षय कोषों से–
तुझमें भरती हूँ आँसू-जल!
सहज-सहज मेरे दीपक जल!

उत्तर–संदर्भ–'मधुर मधुर मेरे दीपक जल!' शीर्षक कविता महादेवी वर्मा के काव्य-संग्रह 'नीरजा (1935) में संगृहीत है। महादेवी वर्मा की ज्यादातर कविताओं को गीत की कोटि में रखा जाता है। इस कविता/गीत में महादेवी वर्मा ने दीपक को साधक के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। उनकी कई कविताओं में दीपक को साधक के रूप में प्रतीक बनाया गया है। दीपक मानो महादेवी वर्मा की भी साधना का प्रतीक है। इस तरह यह दीपक व्यक्तिगत रूप से कवि की साधना का और सार्वजनिक रूप से किसी भी साधक की साधना का प्रतीक है। कवि ने दीपक को संबोधित करके यह बात कही है कि एक साधक को किस तरह का होना चाहिए!

व्याख्या–साधना अनादि काल से चली आ रही है। उस प्रियतम के लिए चलने वाली साधना का कोई ओर-छोर नहीं है। हे मेरे दीपक! सीमाओं में बँध जाना ही लघुता है अन्यथा उस प्रियतम की तरह ही साधना भी असीम और अनंत है! तुम न जाने कब से साधना में लगे हो! जब तुम अनादि काल से अपनी साधना में लीन हो ही तब यह सोचने की जरूरत क्या कि कितनी घड़ियाँ बीत गयीं या कितनी अभी बितानी हैं? तुम यह मत सोचना कि अग्नि प्रज्ज्वलित रखने के लिए ईंधन कहाँ से मिलता रहेगा? सुनो, मेरी आँखों में आँसुओं का अपार भंडार भरा हुआ है। मैं ईंधन के रूप में अपने आँसुओं को देती रहूँगी और तुम करुणा से आप्लावित होकर जलते रहना! तुम्हें कोई देखे तो समझ जाए तुम्हारी लौ में किसी की छलछलाती हुई आँखें बसी हैं!

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

विशेष–1. इस कविता में दीपक साधक का प्रतीक है।

2. अनंत के प्रति रागात्मक भाव के साथ-साथ जीवन संघर्ष को भी यह कविता प्रस्तुत करती है। दीपक की साधना एक सामान्य मनुष्य के जीवन-संघर्ष को भी प्रतिबिंबित कर रही है।

प्रश्न 2. छायावाद की पृष्ठभूमि और प्रारंभ पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'छायावाद की पृष्ठभूमि', पृष्ठ-2, 'छायावाद का प्रारंभ'

प्रश्न 3. जयशंकर प्रसाद के काव्य की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-21, 'प्रसाद काव्य : प्रमुख स्वर', 'इतिहास एवं सस्कृति', पृष्ठ-22, 'राष्ट्रीय चेतना और मानवीयता', 'प्रेम व्यंजना, सौंदर्य चेतना', पृष्ठ-23, 'रहस्य एवं दर्शन'

प्रश्न 4. 'निराला की कविता' के भावपक्ष पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-35, 'निराला काव्य की अंतर्वस्तु'

प्रश्न 5. पंत की काव्य-चेतना के विकास को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-47, 'काव्य चेतना का विकास'

प्रश्न 6. महादेवी वर्मा के रचना विधान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-63, 'काव्य सौंदर्य : रचना विधान'

पश्न 7. 'जूही की कली' कविता का विश्लेषण करते हुए छायावाद में उसके महत्त्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-115, प्रश्न 2

प्रश्न 8. 'नौका विहार' कविता का विवेचन-विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-133, प्रश्न 3

प्रश्न 9. 'विरह का जलजात जीवन' कविता का विश्लेषण करते हुए इस कविता का महत्त्व भी रेखांकित कीजिए।

उत्तर–महादेवी वर्मा कहती है कि उनका जीवन विरह रूपी मोती के समान है और उनका जन्म वेदना में हुआ है और उनका विस्तार करुणा में हुआ है। उनके जो मोती रूपी अश्रु हैं। वे दिन-रात अश्रु रूपी मोती को गिनने और चुनने में कट रहा है। महादेवी वर्मा जी कहती है कि उनका हृदय आंसुओं का खजाना है और उस मोती रूपी आंसुओं का निर्माण हमारी आंखें ही कर रही है। महादेवी वर्मा जी कहती है कि उनका शरीर बादल के समान क्षणिक है, जो तरल जल कण से बना है।

यहां महादेवी वर्मा जी कहती हैं कि बसन्त ऋतु को आनंद का प्रतीक मानती है और बरसात को करुणा का अर्थात सुख और दु:ख दोनों की बात करती हैं। यह मेरा जो जीवन है विरह रूपी मोती के समान है।

समय मुझे मोती रूपी आंसू का हार पहनाकर चला गया है और इस कथा को सांस की हवा में पूछता है और चला जाता है अर्थात उस दु:ख की कथा को एक क्षण में पूछता है। मेरा जीवन विरह रूपी मोती के समान है।

यह जो मेरा लीला स्वरूप अगर यह तुम्हरा हो सकता है तो तुम्हारे निरुपम सौन्दर्य को देखकर मेरी स्मित का प्रात: अर्थात मेरी मुस्कान खिल उठेगी। मेरा जीवन विरह रूपी मोती के समान है। विशेष-1. कवयित्री का कहना है कि दु:ख के बाद भी यह जीवन कमल की तरह है।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-13, पृष्ठ-155, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

छायावाद

छायावाद : स्वरूप और विकास

1

परिचय

द्विवेदी युग के अंतिम चरण में स्वच्छंदतावाद की धारा वेगवती होती चली गई थी। हालांकि स्वच्छंदतावाद की चर्चा श्रीधर पाठक की रचनाओं के संदर्भ में होने लगी थी, किंतु मुकुटधर पांडेय, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद और पंत ने भी अपनी कविता में यत्र-तत्र नए भाव और नवीन अभिव्यंजना शैली को स्थान देना प्रारंभ कर दिया था।

यह स्वच्छंद नूतन पद्धति अपना रास्ता निकाल ही रही थी कि रवींद्रनाथ की रहस्यात्मक कविताओं की धूम हुई और कई कवि एक साथ रहस्यवाद और प्रतीकवाद अथवा चित्रभाषावाद को ही एकांत ध्येय बनाकर चल पड़े। चित्रभाषा अथवा अभिव्यंजना पद्धति पर ही जब लक्ष्य टिक गया, तब उसके प्रदर्शन के लिए लौकिक अथवा अलौकिक प्रेम का क्षेत्र ही पर्याप्त समझा गया। इस बंधे हुए क्षेत्र के भीतर चलने वाले काव्य ने छायावाद का नाम ग्रहण किया।

जबलपुर से प्रकाशित 'श्री शारदा' पत्रिका में मुकुटधर पांडेय की एक लेखमाला 'हिंदी में छायावाद' शीर्षक से निकलीं, यहीं से आधिकारिक तौर पर छायावाद की विशेषताओं का उद्घाटन हुआ। आचार्य शुक्ल ने अपने इतिहास में सन् 1918 से तीर्थ उत्थान का आरम्भ माना है, किन्तु उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि छायावादी ढंग की कविताओं का चलन तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में सन् 1910 से ही हो गया था। श्रीपाल सिंह क्षेम ने जयशंकर प्रसाद को छायावाद का प्रवर्तक घोषित किया है। परिणामस्वरूप सन् 1909 में 'इन्दु' के प्रकाशन की बात कही है, जिसमें 'चित्राधार', 'कानन कुसुम', 'झरना' आदि छप चुकी थीं।

अध्याय का विहंगावलोकन

छायावाद की पृष्ठभूमि

द्विवेदी युग के अंतिम पड़ाव में हिंदी साहित्य में जिस काव्य-प्रवृत्ति का प्रचलन हुआ उसे आगे चलकर 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया। द्विवेदी युग में ब्रिटिश शासन का मुखौटा उतर चुका था। अब लोगों को वास्तविकता का ज्ञान था। अब भारतीय जनमानस परतंत्रता की इन बेड़ियों को तोड़कर स्वाधीनता के खुले आकाश में श्वास लेना चाहता था, किन्तु अंग्रेजों की दमनकारी नीति के कारण ऐसा हो पाना संभव नहीं दिख रहा था। इस राजनीतिक परिदृश्य में 1915-16 के लगभग गांधी जी का भारतीय राजनीति में प्रवेश हुआ। उन्होंने आन्दोलन की बागडोर को संभाला। अब देश की युवा पीढ़ी इस आन्दोलन में सीधे भागीदारी के लिए तैयार थी। असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हो गई थी। ऐसे में भारत के जन-जन में उत्साह की आवश्यकता थी, जिससे सभी एकजुट हो आंदोलन को सफल बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर सकें। एक ओर भारत अकाल और महाभारी की मार सह रहा था तो दूसरी ओर अंग्रेजों के दमन का चक्र चलता ही जा रहा था, जिसका परिणाम जलियांवाला बाग काण्ड था। चारों ओर मृत्यु का सन्नाटा था। एक भय था जिसे दूर कर आशा की किरण का नया संचार करना आवश्यक था, जिसका दायित्व तद्युगीन प्रबुद्ध वर्गों पर था। महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, लोकमान्य तिलक, गोपालकृष्ण गोखले व सुभाषचन्द्र बोस आदि ने जहाँ अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया, वहीं साहित्य के क्षेत्र में तद्युगीन कवि-लेखक भी आगे आये।

युगीन परिस्थितियाँ

छायावादी काव्य का लेखन जिस युग में प्रारंभ हुआ वह युग पराधीनता का युग था। श्वेतों की संस्कृति के अधिभार को उतार फेंकने के लिए बहुत से कवि, दार्शनिक, लेखक, नेतागण अपनी भूमिकाओं का निर्वाह कर रहे थे। जनजागरण का कार्य प्रगति पर था, किन्तु अंग्रेजों की दमनकारी नीति जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के रूप में अब भी जारी थी। अकाल व महामारियों ने मनुष्य जीवन को त्रस्त कर रखा था। इसी पृष्ठभूमि में छायावादी कवियों ने भी समाजिक एवं सांस्कृतिक जागरण का बीड़ा उठाकर साहित्य के क्षेत्र में अपना कदम रखा। उन्होंने जनमानस को व्यक्ति स्वातंत्र्य

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

के महत्त्व को समझाने का कार्य करने के साथ-साथ भविष्य के स्वर्णिम स्वप्न भी लोगों को दिखाए।

साहित्यिक परिवेश

नवीन शिक्षा पद्धति, अंग्रेजी के प्रभाव और अंग्रेजी से प्रभावित बांगला साहित्य के संपर्क ने व्यक्तिवादी भावना को जगाया, जिससे व्यक्ति का अहं उद्दीप्त हो उठा, जो कुछ भी इस उदित अहं के विरोध में आया, उसे अस्वीकार करने की, उसका विरोध का प्रयास किया गया, इसलिए एक ओर तो इस युग के काव्य में द्विवेदीयुगीन नैतिकता और स्थूल की प्रतिक्रिया दिखाई देती है और दूसरी ओर विदेशी दासता के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई देता है।

उदाहरणार्थ, राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों ने विदेशी शासन का विरोध किया और जनता में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की। यह विद्रोह छायावादी कवियों में भी व्यापक रूप में दिखाई देता है। उन्होंने विषय, भाव, भाषा, छंद आदि सभी क्षेत्रों में नए मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास किया। सभी छायावादी कवियों की आरंभिक रचनाओं में निराशा और कुंठा का स्वर दिखाई देता है।

छायावाद का प्रारम्भ

छायावाद का प्रारंभ कब हुआ? इस प्रश्न का आज भी उपयुक्त उत्तर नहीं दिया जा सकता। वस्तुत: कोई भी युग अथवा प्रवृत्ति न तो एकाएक प्रारंभ ही होती है और न ही एकाएक समाप्त। द्विवेदी युग के अंतिम चरण में एक क्षीण धारा के रूप में ही इसका समारंभ हुआ होगा। धीरे-धीरे जब यह धारा बलवती हुई तो द्विवेदीयुगीन धारा निष्प्रभावी एवं क्षीण होकर समाप्त हो गई और मुख्य धारा के रूप में 'छायावाद' की काव्य धारा प्रवाहित होने लग गई।

'छायावाद' शब्द का प्रयोग

हिंदी की कुछ पत्रिकाओं–'श्रीशारदा' और 'सरस्वती' में क्रमश: सन 1920 और 1921 में मुकुटधर पांडेय और सुशील द्वारा दो लेख 'हिंदी में छायावाद' शीर्षक से प्रकाशित हुए थे। अत: कहा जा सकता है कि इस नाम का प्रयोग सन 1920 से अथवा उससे पूर्व से होने लग गया था। संभव है कि मुकुटधर पांडेय ने ही इनका सर्वप्रथम आविष्कार किया हो। यह भी ध्यान रहे कि पांडेय जी ने इसका प्रयोग व्यंग्यात्मक रूप में छायावादी काव्य की अस्पष्टता (छाया) के लिए किया था, किंतु आगे चलकर वही नाम स्वीकृत हो गया। स्वयं छायावादी कवियों ने इस विशेषण को बड़े प्रेम से स्वीकार किया है।

अर्थ विस्तार तथा व्यापकता

'छायावाद' शब्द का अर्थ इतना विस्तृत एवं व्यापक है कि इन्हें कुछ शब्दों की सीमा में बाँधा नहीं जा सकता। इसमें जहाँ प्रेम, सौन्दर्य, वेदना, प्रकृति-चित्रण, अवसाद व भावों का प्रवाह है, वहीं दर्शन, रहस्य, करुणा व शिल्प के मौलिक रूप भी प्रसाद, निराला, पंत व महादेवी जैसे प्रमुख कवि इस युग के सूत्रधार हैं, तो जनार्दन झा 'द्विज', मुकुटधर पाण्डेय, हरिकृष्ण प्रेमी, दिनकर, इलाचंद्र जोशी, जानकीवल्लभ शास्त्री आदि जैसे गौण छायावादी कवि इसके सिपाही थे। जहाँ अनेक अर्थ संप्रेषित करने वाले इस काव्य को व्यक्ति स्वाधीनता का गीत कहा गया, तो वहीं इसे सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना को मौलिक अभिव्यक्ति देने वाला काव्य कहा गया। इस प्रकार, छायावादी काव्य की भावभूमि अत्यंत ही विस्तृत एवं व्यापक है।

छायावाद के प्रमुख कवि

प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद

छायावादी युग के प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी में सुंघनी साहू नाम से प्रचलित एक वैश्य परिवार में 30 जनवरी सन 1889 में हुआ था। प्रसाद जी ने फारसी, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं उर्दू शिक्षा की प्राप्ति घरेलू स्तर पर ही की थी। वेद, पुराण, साहित्य एवं दर्शन का ज्ञान प्रसाद जी ने स्वाध्याय से ही प्राप्त किया था। आपमें काव्य सृजन के गुण बाल्यकाल से ही निहित थे। प्रसाद जी का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा वाला है, वह एक कुशल कहानीकार, निबंधकार, नाटककार एवं उपन्यासकार होने के साथ-साथ कवित्व गुणों के धनी व्यक्ति थे। हिंदी साहित्य से प्रसाद जी के नाम को अलग कर पाना असंभव है। हिंदी साहित्य के लिए आपकी उपलब्धि एक युगांतकारी घटना है। युग प्रवर्तक साहित्यकार प्रसाद ने काव्य एवं गद्य दोनों ही विधाओं में रचनाएं करके हिंदी जगत को सशक्त एवं प्रभावशाली पत्र प्रदान किया है। इसके साथ ही उन्होंने महाकाव्यों की रचना करके आधुनिक काल में भी अपना अग्रिम स्थान ग्रहण किया है हिंदी साहित्य में जयशंकर प्रसाद का नाम सर्वोपरि है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 11 फरवरी 1896 को बंगाल के मेदनीपुर नामक जिले में वसंत पंचमी के दिन हुआ था। सूर्यकान्त जी महाकवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा के साथ हिंदी काव्य संसार में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। आपके जीवन का अंतिम समय इलाहाबाद में बीता। निराला जी की रचनाओं में अनेक प्रकार के भाव पाए जाते हैं। यद्यपि वे प्राय: खड़ी बोली के कवि थे, परन्तु वे ब्रजभाषा एवं अवधी भाषा में भी कविताएँ गढ़ लेते थे। आपकी रचनाओं में कहीं प्रेम की सघनता है, कहीं आध्यात्मिकता तो कहीं विपन्नों के प्रति सहानुभूति व संवेदना, कहीं देश-प्रेम का जज्बा, तो कहीं सामाजिक रूढ़ियों का विरोध, तो कहीं प्रकृति के प्रति झलकता अनुराग। आपकी प्रमुख काव्यकृतियाँ अग्रलिखित हैं–

कविता संग्रह–परिमल, अनामिका, गीतिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, तुलसीदास, जन्मभूमि।

उपन्यास–अप्सरा, अल्का, प्रभावती, निरूपमा, चमेली, उच्छश्रृंखलता, काले कारनामे।

निबन्ध संग्रह–प्रबन्ध-परिचय, प्रबन्ध प्रतिभा, बंगभाषा का उच्चारण, प्रबन्ध पद्य, प्रबन्ध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संघर्ष।

अनुवाद–आनन्द मठ, विश्व-विकर्ष, कपाल कुण्डला, दुर्गेश नन्दिनी, राज सिंह, राज रानी, देवी चौधरानी, युगलंगुलिया,

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

चन्द्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्ण वचनामृत, भारत में विवेकानन्द, राजयोग।

सुमित्रानन्दन पंत

प्रकृति के सुरम्य गोद में कवि सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, सन् 1900 को अल्मोड़ा के निकट कौसानी नामक एक छोटे से ग्राम में हुआ था। पंत जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में ही प्राप्ति की। अध्ययन में आपकी रुचि निरंतर बनी रही और आपने स्वाध्याय से ही संस्कृत, बांग्ला, हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। इलाहाबाद को प्रकृति की गोद भी कहा जाता है और इसी गोद में पलने के कारण आपने अपनी सुकुमार भावना की प्रकृति को अपनी काव्य रचनाओं में व्यक्त किया। आपने 'रूपाभ' पत्रिका का प्रकाशन किया। यह पत्रिका प्रगतिशील विचारों पर आधारित थी। इसके अतिरिक्त आपने 'भारत छोड़ो आंदोलन' से प्रेरित होकर सन् 1942 में 'लोकायन' नामक संस्कृति पीठ की स्थापना की और तत्पश्चात् भारत भ्रमण हेतु निकल पड़े।

अनन्य प्रकृति प्रेमी तथा विदग्ध–विचारक कवि पंत ने बाल्यावस्था से ही काव्य-सृजन प्रारम्भ कर दिया था। कवि रूप में स्थापित इस महान व्यक्तित्व ने काव्य से इतर नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध संस्मरण तथा समीक्षा के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, किन्तु मूलत: वे कवि ही थे और अपनी विशिष्ट पहचान भी इसी क्षेत्र में बना सके। समय-समय पर गांधी, मार्क्स तथा अरविन्द आदि से प्रभावित और प्रेरित होने वाले इस प्रकृति-प्रेमी कवि की आरम्भिक रचनाएं 'वीणा' में संकलित हैं। इसके अतिरिक्त अन्य काव्य कृतियों में 'ग्रन्थि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगान्त', 'ज्योत्स्ना', 'अंतिमा', 'ग्राम्या', 'युगवाणी', 'युगान्तर', 'स्वर्ण-किरण', 'स्वर्ण-धूलि', 'उत्तरा', 'रजत शिखर', 'शिल्पी', 'लोकायतन', 'कला और बूढ़ा चाँद', 'किरण', 'पौ फटने से पहले', 'गीतहंस', 'समाधिता', 'आस्था' तथा 'सत्यकाम' आदि चिरस्मरणीय हैं। प्रकृति चित्रण का हृदयग्राही चित्रण और उसमें भी कोमल पक्ष विशेष रूप से कवि की रुचि का वैशिष्ट्य है।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का उनका जन्म 26 मार्च 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नामक शहर में हुआ था। उनकी माता का नाम हेमरानी था, जोकि एक कवयित्री थी एवं श्रीकृष्ण में अटूट श्रद्धा रखती थी। महादेवी वर्मा जी नाना जी को भी ब्रज भाषा में कविता करने की रची थी और नाना एवं माता के इन्हीं गुणों का गहरा प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा।

रहस्य, वेदना और गीतात्मकता की अमर-सृजक महादेवी वर्मा को काव्य ही नहीं, रेखाचित्र, संस्मरण, निबन्ध तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले महादेवी वर्मा के बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व ने 'वेदना' के मर्म से जो तादाकार किया और कराया है, वह निश्चित ही उनका अपना वैशिष्ट्य है। सन् 1930 ई. में उन्होंने 'नीहार' नामक काव्य संकलन प्रदान किया और उनकी प्रतिभा की धूम पूरे भारत में मच गई। इसके बाद लगातार सन् 1934 ई. में 'नीरजा', सन् 1936 में 'सांध्यगीत' तथा सन् 1940 ई. में 'दीपशिखा' जैसी कृतियों में गीतों के माध्यम से आध्यात्मिक-वेदना और रहस्य-चेतना को मुखर बना दिया। हिंदी साहित्य में आधुनिक मीरा के नाम से भी जानी जाती हैं।

छायावाद की अन्तर्वस्तु

लम्बे विचार-विमर्श के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि छायावाद न रहस्यवाद है, न केवल शैली और न ही केवल स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह या आग्रह। इन सब परिभाषाओं में उसकी एक प्रमुख विशेषता की ओर संकेत तो मिलता है, पर उसकी समग्रता परिभाषित नहीं होती। छायावाद इनमें संकेतित हर विशेषता से कुछ अधिक है। एक अरसे से शुक्लोत्तर आलोचक इस 'कुछ' को पारिभाषित करने का प्रयास करते आ रहे हैं।

व्यक्ति-स्वातंत्र्य का स्वर

छायावादी काव्य में वैयक्तिकता का प्राधान्य है। कविता वैयक्तिक चिंतन और अनुभूति की परिधि में सीमित होने के कारण अंतर्मुखी हो गई, कवि के अहम् भाव में निबद्ध हो गई। कवियों ने काव्य में अपने सुख-दु:ख, उतार-चढ़ाव, आशा-निराशा की अभिव्यक्ति खुलकर की। उसने समग्र वस्तुजगत को अपनी भावनाओं में रंगकर देखा। जयशंकर प्रसाद का 'आंसू' तथा सुमित्रानंदन पंत के 'उच्छवास' और 'आंसू' व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति के सुंदर निदर्शन हैं। इसके व्यक्तिवाद के स्व में सर्व सन्निहित है। डॉ. शिवदान सिंह चौहान इस संबंध में अत्यंत मार्मिक शब्दों में लिखते हैं–छायावादी कवियों की भावनाएं यदि उनके विशिष्ट वैयक्तिक दु:खों के रोने-धोने तक ही सीमित रहती, उनके भाव यदि केवल आत्मकेंद्रित ही होते तो उनमें इतनी व्यापक प्रेषणीयता कदापि न आ पाती। निराला ने लिखा है–

"मैंने मैं शैली अपनाई,
देखा एक दु:खी निज भाई
दुख की छाया पड़ी हृदय में
झट उमड़ वेदना आई।"

इससे स्पष्ट है कि व्यक्तिगत सुख-दु:ख की अपेक्षा अपने से अन्य के सुख-दुख की अनुभूति ने ही नए कवियों के भावप्रवण और कल्पनाशील हृदयों को स्वच्छंदतावाद की ओर प्रवृत्त किया।

रूढ़ियों से मुक्ति का प्रयास

छायावादी काव्य ने परंपरागत मान्यताओं को ठुकराकर मुक्त जीवन जीने की नयी राह बनायी। उनकी भाषा, उनका शिल्प, उनके विषय सभी कुछ मौलिक हैं। 'तोड़ो-तोड़ो-तोड़ो कारा' कहकर निराला इस स्वच्छन्द धारा की राह प्रशस्त करते हैं। पंत 'जीर्ण पत्रों के झरने' का संदेश लाते हैं। कुप्रथाओं व सड़ी-गली मान्यताओं को अपने नव उत्साह द्वारा तोड़कर एक ओर कर नयी राह पर चलना चाहते हैं और चलते हैं।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्राकृतिक स्पंदन

छायावादी कवियों की रचनाएँ पारंपरिक भारतीय रचनाओं (कालिदास, जयदेव, विद्यापति, तुलसीदास, सूरदास) से इस बात में ऊपरी तौर पर भिन्न दिखती हैं कि उनमें प्रकृति चित्रण अपने आप में ध्येय नहीं होता, अपितु मानवीय भावनाओं से पूर्ण होता है। छायावादी रचनाओं में प्राकृतिक चित्रों के माध्यम से मानवी भावनाओं और अनुभूतियों के जगत् को समझने का प्रयास प्रमुख विशेषता बनकर उभरता है। वास्तव में छायावाद ऊपर से जितना नया और मौलिक दिखता है, उससे कहीं अधिक इसके भीतर आधुनिकता और परम्परा के बीच के भारतीय द्वंद्व एवं संश्लेषण का युगीन अभिव्यक्ति है। इसमें परम्परा का पुनर्नवीनीकरण ही हुआ। निराला पर रामकृष्ण परमहंस एवं विवेकानंद का प्रभाव था। प्रसाद काश्मीर शैवागम और अभिनवगुप्त से प्रभावित थे। पंत पर अरविन्दो का प्रभाव था। महादेवी वर्मा पर मीराबाई का प्रभाव था। प्रेमचंद पर महात्मा गांधी और दयानंद सरस्वती का प्रभाव था। दुर्भाग्य से अब तक छायावाद के विश्लेषण पर मार्क्सवादी आलोचकों ने ही व्यवस्थित काम किया है। इन लोगों ने छायावादी रचनाकारों की पारम्परिक चिन्तनधारा को अनदेखा करने का काम किया है। वागीश शुक्ल ने निराला पर नई दृष्टि से चिन्तन किया है। रामस्वरूप चतुर्वेदी की आलोचना में भी कुछ नयापन है। परंतु आधुनिक काल के भारतीय चिन्तकों-रामकृष्ण, विवेकानन्द, महात्मा गांधी, अरविन्दो या इनके पूर्व के आचार्यों-शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, अभिनवगुप्त, गोरखनाथ, कबीर आदि की चिन्तन धारा के आलोक में छायावादी कवियों एवं लेखकों का व्यवस्थित मूल्यांकन होना अभी बाकी है।

गीतात्मक मधुर वेदना

छायावादी युग की कविता का सृजन अधिकतर मधुर वेदना से परिपूर्ण गीतों के रूप में हुआ। पहले कवि की बात आती है तो इस युग का कवि कहता है–

"वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान ....।"

और 'अनजान' कविता चुपचाप आँखों से बह निकली होगी अर्थात् मानव मन की, हृदय की गहन अनुभूतियों को अनुभव कर इस युग का कवि काव्य सृजन के क्षेत्र में उतरा। उसकी अभिव्यक्ति मात्र सुन्दर शब्दों की कविता नहीं अपितु हृदय की मधुर वेदना का गान है, जिससे वह सुख-दुःख का अनुभव करता है। इन्हीं गहन भाव-विचारों की अभिव्यक्ति के चलते महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा गया। वे विरह की मधुर वेदना को संजोकर रखना चाहती हैं, क्योंकि उन्हें इस मधुर-वेदना में भी सुख की अनुभूति मिलती है और वे उस सीमा के पार पहुँच जाती हैं, जहाँ सुख-दुःख में कोई अंतर नहीं रह जाता। ब्रह्म और जीव की द्वैतता समाप्त हो जाती है–

"दमकी दिंगत के अधरों पर स्मित की रेखा-सी क्षितिज
कोर आ गए एक क्षण में समीप आलोक तिमिर के दूर कोर
घुल गया अश्रु में अरूण हास हो गई हार में जय विलीन!"

'जीवन संघर्ष' महादेवी जी को प्रिय है, क्योंकि इसी से 'सत्य' का बोध होता है। 'ब्रह्म' की अनुभूति होती है और वे इस 'सत्य' व 'अनुभूति' का अनुभव सभी को करवा देना चाहती हैं–

"विरह का युग आज दीखा, मिलनी के लघु पल-सरीखा,
दु:ख-सुख में कौन तीखा, मैं न जानी औ न सीखा।
मधुर मुझको हो गये सब मधुर प्रिय की भावना लें।"

प्रसाद और पंत के सृजन में भी वेदना की इस अनुभूति के दर्शन सहज ही होते हैं। 'प्रसाद' को 'प्रिया' की उपेक्षा गंभीर वेदना देती है। उन्हें उसका वियोग खलता है। इसी विरह वेदना में वे गा उठते हैं–

"कब तक और अकेले? कह दो हे मेरे जीवन बोलो?
किसे सुनाऊँ कथा? कहो मत अपनी निधि न व्यर्थ खोलो!"

पंत भी कांटों भरी राह से गुजरते हैं। भावों को अभिव्यक्त न कर पाने की पीड़ा, आशाओं के अनुरूप सफल न होना, प्रेमिका का कठोर व्यवहार सभी कुछ इसके उत्तरदायी बनते हैं और विरह के अश्रु सागर में कवि को धकेल देते हैं–

"मेरा पावस ऋतु सा जीवन,
मानस सा उमड़ा अपार मन;
गहरे, धंधले धुले, सांवले
मेघों से मेरे भरे नयन।"

किन्तु जिस प्रकार सोना अग्नि में जलकर और भी निखरता है, उसी प्रकार विरह रूपी अग्नि में जलकर कवि भी जीवन सत्यों को अनुभव करता है और कहता है–

"बिना दुख के सब सुख निस्सार,
बिन आँसू के जीवन भार!
× × × ×
आज का दुख, कल का आह्लाद
और कल का सुख आज विषाद!"

महाकवि 'निराला' ने भी जीवन की कटुताओं को झेला, जिससे मौलिक उद्भावनाओं का उदय उनके जीवन में हुआ।

नवीन छंदों की उद्भावना कर काव्य सृजन किया। अपनी तरह से वे कविता करते हैं–

"मेरे प्राणों में आओ!
शत-शत शिथिल भावनाओं के
डर के तार सजा जाओ!"

इस प्रकार छायावादी कवि हृदय की गहन-गंभीर अनुभतियों को गूँथकर काव्य सृजन करता है, जिससे मधुर वेदनात्मक गीत स्वयं ही फूट पड़ते हैं। इन गीतों में मात्र विरह की तपिश ही नहीं अपितु उसकी तपिश में तपकर चमकते हुए जीवन-दर्शन के अद्भुत विचार भी हैं, जो मानव को मानवता का संदेश देते हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com